साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 10-17 जुलाई 2023 वर्ष-9, अंक-13

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

सीएम ने कहा-छह लाख रुपए तक मिलेगी सहायता

प्रदेश में केला सहित उद्यानिकी फसलों का होगा बीमा

- ईराक, ईरान, टर्की, दुबई जा रहा बुरहानपुर का केला
- किसानों के कल्याण के लिए राज्य सरकार ने बदले मापदंड
- संशोधन के बाद किसानों को मिल रही है दोगुनी राहत राशि
- बुरहानपुर के चार हजार 261 किसानों को दिए 41 करोड़

भोपाल। जागत गांव हमार

ओलावृष्टि और अतिवर्षा से बुरहानपुर जिले में केले की फसल को हुए नुकसान से राहत देने के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 41 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता सिंगल क्लिक के माध्यम से खाते में अंतरित की। साथ ही अधिकारियों को निर्देश दिए कि केला सहित उद्यानिकी से संबंधित फसलों का भी बीमा करवाया जाए। बुरहानपुर में तीन हजार छह सौ हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में केले के फसल पूरी तरह नष्ट हो गई थी। अभी तक राजस्व पुस्तक परिपत्र में अधिकतम तीन लाख तक राहत राशि देने का प्रावधान था, जबकि केले की फसल में लागत अधिक आती है। इसे देखते हुए सरकार ने राजस्व पुस्तक परिपत्र के प्रावधान में संशोधन करके अधिकतम छह लाख तक राहत राशि देने का प्रावधान कर दिया है। साथ ही प्रति हेक्टेयर दी जाने वाली राशि भी दोगुना कर दी है। इसके अनुसार ही किसानों के खातों में राशि अंतरित की गई।

राहत राशि दोगुनी: मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक आपदा से फसल को नुकसान होता है तो उसके दर्द का अंदाजा किसान ही लगा सकता है। केले की फसल में लागत बहुत लगती है। प्राकृतिक आपदा से हुई क्षति के कारण किसान परेशान थे। बीमा भी नहीं हो पाया था। इसे देखते हुए हमने राहत राशि दोगुनी कर दी है। किसानों को अब मुख्यमंत्री किसान कल्याण निधि भी चार के स्थान पर छह रुपए प्रतिवर्ष मिलेगी।

किसानों के कल्याण के लिए उठाए कदम

मुख्यमंत्री ने कहा कि मप्र में पूर्व सरकार ने किसानों को डिफाल्टर बना दिया था। वर्तमान राज्य सरकार ने 2200 करोड़ का भुगतान कर किसानों को राहत दी। गत 3 वर्ष में किसानों के लगभग डेढ़ करोड़ बीमा दावों की 20 हजार करोड़ की राशि का भुगतान किया गया। किसानों के खाते में करीब पौने 3 लाख करोड़ की राशि के हितलाभ अंतरित किए गए। इसी तरह 49 हजार करोड़ के कृषि ऋण शून्य प्रतिशत ब्याज पर दिए गए। मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना की राशि डेढ़ गुना करते हुए वार्षिक 4 हजार के स्थान पर 6 हजार की गई। किसान को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की वार्षिक 6 हजार की राशि भी प्राप्त होती है। इस तरह किसान को बारह माह में 12 हजार की राशि मिलेगी। अन्य योजनाओं से भी किसान का परिवार लाभान्वित होता है।

50 हजार किसानों को क्रेडिट कार्ड जारी | राजस्व मंत्री ने कहा कि मंत्रिपरिषद ने किसानों को फसलों के नुकसान पर दी जाने वाली राशि को दोगुना किया है। राजस्व पुस्तक परिपत्र में संशोधन किए गए हैं। बुरहानपुर में वर्ष 2003 में सिंचाई क्षमता सिर्फ 1675 हे. थी, जो अब बढ़ कर 23 हजार 158 हे. हो गई है। उद्यानिकी फसलों का क्षेत्र तीन गुना बढ़ गया है, जो वर्तमान में 32 हजार हेक्टेयर से अधिक है। जिले में 50 हजार से अधिक किसानों को क्रेडिट कार्ड जारी किए गए हैं।

सरकार किसानों के साथ | सीएम ने कहा कि नि:शुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराने के साथ अब बुरहानपुर में प्रत्येक घर में नल से जल मिल रहा है। इससे देश में इसका नाम राशन हो रहा है। जिले में सिंचाई क्षमता बढ़ाने के लिए 67 योजनाएं स्वीकृत की गई हैं। संकट की घड़ी में हमेशा सरकार किसानों के साथ खड़ी है। किसी भी परेशानी से निपटने के लिए सरकार तैयार है।

शहर से लगे 90 गांवों में लगाई जानी थी सोलर स्ट्रीट लाइट

अंधेरे में गांव! ठंडे बस्ते में सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने की योजना

-योजना के तहत एक-दो गांव में लगीं लेकिन अब काम ठप

भोपाल। जागत गांव हमार

जिले की पंचायतों में सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने की योजना अब ठंडे बस्ते में चली गई है। इस योजना के तहत शहरी सीमा से लगे 90 गांवों में ये लाइट लगाई जानी थीं, लेकिन शुरुआत में एक-दो गांव में लाइट लगने के बाद यह काम पूरी तरह से ठप हो गया है। दरअसल जिला पंचायत द्वारा गांवों में सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने की योजना थी। इसके लिए जिला पंचायत के पास एक करोड़ रुपए का बजट भी था, लेकिन काम पूरा नहीं किया जा सका है। केंद्र सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा यह योजना बनाई गई थी कि सभी पंचायतों में सौर ऊर्जा से चलने वाली स्ट्रीट लाइट लगाई जाएंगी, लेकिन इस पर पंचायतों में तरीके से काम नहीं किया जा सका है।

काम होता तो गांव हो जाते रोशन- केंद्र सरकार की इस योजना के तहत यदि जिला पंचायतों में सोलर लाइट लगाने का काम पूरा किया जाता तो गांव रोशन हो जाते। इन गांवों में सड़कों के अलावा स्कूल, अस्पताल, पशु चिकित्सालय, हाट बाजार, सामुदायिक भवन आदि सार्वजनिक स्थानों को सौर ऊर्जा से रोशन किया जाना था।

काम अटकने की यह बताई जा रही है वजह

राजधानी से लगे ग्रामीण क्षेत्रों को माडल बनाने और सौर ऊर्जा से सड़कों को रोशन करने के लिए योजना के तहत 90 से अधिक गांव में सोलर चलित स्ट्रीट लाइटें लगाई जानी थी। इसके लिए लगभग एक करोड़ रुपये का बजट भी पंचायत के पास आया था, लेकिन सौर ऊर्जा से संबंधित कोई भी काम ऊर्जा विकास निगम से कराने के आदेश के चलते यह काम पूरी तरह से बंद हो गया है। वहीं निगम के अधिकारियों का कहना है कि फिलहाल गांव में सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने की कोई योजना उनके पास नहीं हैं।

केंद्र सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा ग्राम पंचायतों में सोलर लाइट लगाने की योजना शुरू की गई थी। इसके तहत कुछ पंचायतों में लाइटें भी लगाई गई थीं, लेकिन फिलहाल यह काम बंद है।

- ऋतुराज सिंह, सीईओ, जिला पंचायत भोपाल

लगाई जानी थीं 700 से अधिक लाइट

योजना के तहत 90 से अधिक गांव में 700 से अधिक सोलर स्ट्रीट लाइट लगनी थी, लेकिन यह काम नहीं हो सका है ऊर्जा विकास निगम द्वारा आदर्श ग्रामों के अस्पतालों में सौर ऊर्जा के प्लांट लगाए गए हैं। यह भवन सौर ऊर्जा से रोशन हैं। अगर यह योजना धरातल पर उतर आती तो ग्रामीण क्षेत्रों के रहवासियों का इसका लाभ मिलता।

जबलपुर में 79 हजार खसरे असत्यापित, युद्धस्तर पर सत्यापन का काम चल रहा

मूंग उपार्जन पर सेटेलाइट इमेज का साया, किसान परेशान

जबलपुर। जागत गांव हमार

जिले में ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द का उपार्जन शुरू हो चुका है, लेकिन इस पर भी सैटेलाइट की स्याह छाया पड़ गई है। सेटेलाइट इमेज के आधार पर शासन के पोर्टल पर बड़ी संख्या में पंजीयन से संबंधित खसरों को असत्यापित कर दिया गया है। किसान अपनी उपज बेचने से वंचित न हों, इसके लिए प्रशासन की ओर से पुन: सत्यापन कराया जा रहा है। जहां-जहां उड़द और मूंग की बोवनी कराई गई है, वहां-वहां के पटवारियों एवं आपरेटरों को कलेक्टर कार्यालय में बुलवाकर सत्यापन का कार्य युद्धस्तर पर कराया जा रहा है। जिले में ग्रीष्मकालीन उड़द और मूंग के उपार्जन के लिए अब तक ठीक तरह से केंद्रों का निर्धारण भी नहीं हो पाया है। इसी बीच शासन स्तर से एक नई उलझन सामने आ गई है। शासन की ओर से मूंग और उड़द की फसलों को लेकर जो सेटेलाइट इमेज भेजी गई हैं, वो पंजीयनों में दर्ज खसरों से मेल नहीं खा रही। जिले में करीब 57 हजार से अधिक खसरों को सेटेलाइट इमेज के आधार पर असत्यापित कर दिया गया है। मूंग और उड़द के असत्यापित खसरों को मैनुअल तरीके से सत्यापित किए जाने का काम कराया जा रहा है। इस प्रक्रिया के बाद ही संबंधित किसानों से उड़द-मूंग की खरीदी की जा सकेगी।

खसरे असत्यापित

तहसील	संख्या
मझौली	28609
सिहोरा	21021
पनागर	14519
शहपुरा	6903
पाटन	4957
कुंडम	1291
जबलपुर	911
गोरखपुर	506
अधारताल	475
रांझी	90
महायोग	79282

पहले भी सामने आ चुकी अड़चन

2022 में भी जिले में धान और गेहूं के उपार्जन के समय हजारों की संख्या में खसरे असत्यापित हुए थे। सेटेलाइट इमेज की वजह से पैदा हुई तकनीकि परेशानियों की वजह से जहां प्रशासन को दोबारा काम करना पड़ा वहीं किसानों को भी पहले उपज को बेचने और फिर फसल का भुगतान प्राप्त करने में एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा। असत्यापित खसरों की संख्या सबसे ज्यादा करीब 28 हजार मझौली, 21 हजार सिहोरा और करीब 14 हजार पनागर में है।

बार-बार हो रही गड़बड़ी

लगातार तीन उपार्जन सीजन के दौरान सेटेलाइट इमेज से संबंधित परेशानी प्रकाश में आ रही है। शासन स्तर से इमेज आधारित रिपोर्ट आने के बाद हर बार जिला प्रशासन के अमले ने असत्यापित खसरों को मैनुअली सत्यापित किया। ऐसे में सवाल यही उठता है कि ये गड़बड़ी हो क्यों रही है। क्या सेटेलाइट इमेज के माध्यम से मानीटरिंग की योजना फेल हो रही है, या किसानों और अपने मैदानी अमले की खामियों पर जिला प्रशासन बार-बार पर्दा डालने का प्रयास कर रहा है। यदि सेटेलाइट इमेज की वजह से पूरी व्यवस्था प्रभावित हो रही है, तो उसके माध्यम से मानीटरिंग करवाई ही क्यों जा रही है।

बारिश का मौसम आते ही टमाटर के भाव छू रहे आसमान

किसानों को मिले सरकारी सहयोग तो सब्जी की खेती में हम होंगे आत्मनिर्भर

ग्वालियर। जागत गांव हमार

बारिश का मौसम आते ही टमाटर के दाम लाल(महंगे) हो चुके हैं। इस समय लोग डेढ़ सौ से दो सौ रुपए किलो टमाटर खरीदने के लिए मजबूर हैं, क्योंकि शिवपुरी, मोहना से आने वाला टमाटर खेतों से गायब हो चुका है और व्यापारी बैंगलुरु से टमाटर मंगवाकर उपलब्ध करा रहे हैं। कृषि वैज्ञानिक राजसिंह कुशवाह का कहना है कि टमाटर की फसल 12 माह ली जा सकती है, लेकिन हमारे यहां सिंचाई के साधन और भीषण गर्मी से फसल का बचाव न कर पाने के कारण किसान ग्रीष्म ऋतु में हरी सब्जी सहित टमाटर की फसल की बोवनी नहीं करते हैं। जिसका खामियाजा हमें जुलाई-अगस्त में औसत दाम से दस गुना दाम अदा कर उठाना पड़ता है। यदि सरकार इस दिशा में संज्ञान ले और किसानों को ग्रीष्म ऋतु में फसल उगाने में मदद करे तो संभवत: हम दूसरे राज्यों से आने वाली सब्जी पर आश्रित नहीं रहेंगे और अधिक दाम भी नहीं चुकाने पड़ेंगे।

पिछली साल टमाटर की पैदावार कम थी इसलिए उसकी मांग अच्छी रही। जिसको लेकर इस बार किसान ने टमाटर की फसल का रकबा बढ़ा दिया। इधर मई में बे-मौसम बारिश हुई तो फसल जल्दी पक गई। उधर बाजार में टमाटर की मांग पूरी तरह से घट गई। किसान को टमाटर खेत से बाजार तक ले जाने पर कुछ बच नहीं रहा था इसलिए फसल जानवरों को खिला दी। इस कारण टमाटर खेतों से जल्दी गायब हो गए।

पाली व नेट हाउस महंगा पड़ता

उद्यानिकी अधिकारी का कहना है कि 42 डिग्री तापमान पहुंचते हैं टमाटर की फसल खराब होने लगती है। इसके बचाने के लिए हाइब्रिड बीज जो इतना तापमान तक टमाटर को जीवत रख सके उसका प्रयोग किसान को करना चाहिए।गर्मी में तापमान 42 डिग्री से अधिक निकलने के कारण पाली व नेट हाउस का प्रयोग किया जा सकता पर उसके अंदर फौगर लगाना होगा।सरकार 50 फीसद सब्सिडी भी दे रही है इसके बाद भी एक बीघा भूमि पर पाली या नेट हाउस बनाने में 5 से 7 लाख रुपये का किसान का खर्चा आता है।

इन क्षेत्रों में पैदावार

उद्यानिकी के असिस्टेंट डायरेक्टर एमपीएस बुंदेला का कहना है कि शहर के आसपास हिम्मतगढ़, मऊच, बनवार, कुअंरपुरा, भदरौली, वीरपुर, गिरवाई, मोहना, शिवपुरी क्षेत्र में टमाटर व अन्य हरी सब्जियों का उत्पादन बड़े स्तर पर किसान करते हैं। बाकी के स्थान पर किसान रबी और खरीफ के मौसम में धान की फसल लेते हैं।

सब्जी के भाव-

सब्जी	थोक	खेरिज	आवक
टमाटर	80	160	बैंगलुरु
आलू	15	30	इटावा
बैंगन	25	50	आगरा
भिंडी	25	60	शमशाबाद
अरबी	35	80	बरुआ सागर
लौकी	13	30	स्थानीय व आगरा
तौरई	24	60	स्थानीय
मिर्ची	30	60	राजस्थान
अदरक	160	250	बरुआ सागर
धनिया	55	100	शिवपुरी
फूलगोभी	32	60	नासिक
पत्तागोभी	12	30	नासिक

किस मौसत में कौनसी सब्जी

-टमाटर, मिर्ची, बैंगन, सलगम आदि फसलों की बुवाई किसान रबी मौसम अक्टूबर-नवंबर में करते हैं। जिसकी फसल जनवरी से आना शुरू हो जाती है। यह फसल मार्च, अप्रैल, मई और जून तक आती है।
-किसान मार्च-अप्रैल में लौकी, भिंडी, तौरई, खीरा, ककड़ी, कद्दू सहित बेल वाली फसल करते हैं। जिसकी आवक अगस्त तक रहती है, लेकिन इस बार मई में बारिश के कारण फसल को नुकसान हुआ।
-किसान जुलाई में सभी प्रकार की फसल जैसे टमाटर, मिर्ची, बैंगन, भिंडी, तौरई, लौकी, कद्दू, खीरा की फसल लगाना शुरू कर देते हैं। फसल अगस्त के आखरी माह से आना शुरू हो जाती है जो दिसंबर तक आती रहती है।
-स्थानीय किसान अप्रैल-मई में फसल की बोवनी नहीं करते, क्योंकि पानी की उपलब्धता कम रहती है। ग्वालियर अंचल में भीषण गर्मी रहती है इस कारण खेत में बोई फसल का रखरखाव अधिक करना पड़ता है इसलिए गर्मी में किसान फसल नहीं बोते।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

किसानों को दी गई तकनीकी जानकारी

कटनी। जागत गांव हमार

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र कटनी में दिनांक 7 जुलाई 2023 को वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें 45 सदस्यों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ डी पी शर्मा, संचालक विस्तार सेवाएं, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर द्वारा की गई। कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ ए के तोमर के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, संचालक विस्तार सेवाएं के तकनीकी अधिकारी डॉ पी के गुप्ता एवं कृषि विज्ञान केंद्र कटनी के वैज्ञानिक डॉ आर के मिश्रा, डॉ अर्पिता श्रीवास्तव, डॉ आर पी बेन, डॉ के पी द्विवेदी, संदीप चंद्रवंशी प्रियंका धुर्वे, उपस्थित थे। कृषि विभाग,उद्यानिकी विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं पशुपालन विभाग, बीज उत्पादन निगम के अधिकारी एवं कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के साथ ही जिले के प्रगतिशील कृषकों ने कार्यक्रम में विभिन्न तकनीकी जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ ए के तोमर ने रबी 2022 23 की प्रगति एवं खरीफ 2023 की कार्यशाला की कार्य योजना को प्रस्तुत किया। जिसको कृषि विश्वविद्यालय के संचालक विस्तार सेवा डॉ डी पी शर्मा ने कार्यक्रम के प्रकरण का अवलोकन किया एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने अपने-अपने सुझाव दिए।

सफल कार्यक्रम को मिली सराहना

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ डी पी शर्मा संचालक विस्तार सेवाएं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर ने सराहना की और सुझाव दिए जिले के लिए कृषि विज्ञान केंद्र और अच्छे से काम करें और कार्यकर्ता एवं कृषकों ने अपनी उपस्थिति दे कर कार्यक्रम को सफल बनाया। अध्यक्ष ने तकनीकी मार्गदर्शन के अंतर्गत दिए गए सुझाव निम्नानुसार है पान की खेती करने वाले कृषकों से उत्पादन तकनीकी के बारे में फीडबैक लिया जाए एवं जिले के अन्य कृषकों को पान की खेती करने के लिए प्रेरित किया जाए। पान की उन्नत खेती की कार्यशाला का भी आयोजन किया जाए। केंद्र में बकरी पालन इकाई का निर्माण किया जाए। केंद्र की बाड़ी में नीम का रोपण किया जाए। गाजर का उन्मूलन के लिए मैक्सिकन बीटल कृषकों को प्रदान किए जाएं जिले में लघु धान्य फसलों का क्षेत्र चिन्हित कर इन फसलों के उत्पादन को बढ़ाया जाए कृषकों को पान की नई किस्म प्रदान की जाए, जिससे उत्पादन वृद्धि हो और उचित मूल्य प्राप्त हो केंद्र में आंवला का रोपण किया जाए।

कृषि उपभोक्ताओं को नये पोर्टल 'सरल संयोजन पोर्टल' पर आवेदन के बाद अतिशीघ्र नया कनेक्शन उपलब्ध करा रही

खेती के लिए बिजली कनेक्शन लेना हुआ आसान, आनलाइन पोर्टल शुरू

भोपाल। खेती में सिंचाई का महत्वपूर्ण स्थान है जहां उपयुक्त सिंचाई के साधन होने से कृषि में जोखिम कम होता है वहीं पैदावार भी बढ़ती है। सिंचाई के महत्व को देखते हुए सरकार द्वारा किसानों को सिंचाई संसाधन एवं सिंचाई यंत्र उपलब्ध कराने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इस कड़ी में मध्य प्रदेश की मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने किसानों को आसानी से नए बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराने के लिए ऑनलाइन पोर्टल की शुरुआत की है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी अब निम्नदाब घरेलू एवं कृषि उपभोक्ताओं को नये पोर्टल सरल संयोजन पोर्टल पर विधिवत आवेदन के बाद अतिशीघ्र ही नवीन बिजली कनेक्शन उपलब्ध करा रही है। जिससे अब नवीन बिजली कनेक्शन लेना और आसान हुआ है।

आवेदकों को 24 घंटे के अंदर दिया गया बिजली कनेक्शन

कंपनी द्वारा इस पोर्टल से अभी तक 10 आवेदकों को समस्त प्रक्रियाएं पूर्ण कर आवश्यक दस्तावेजों सहित नये बिजली कनेक्शन के लिए ऑनलाइन आवेदन करने के 24 घंटे के भीतर ही नया बिजली कनेक्शन दिया गया है। इस पोर्टल से आवेदन अपूर्ण होने की स्थिति में कंपनी द्वारा आवेदक को एसएमएस से आवेदन पूर्ण करने का एक अवसर भी प्रदान किया जा रहा है। उपभोक्ता द्वारा इस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन के बाद उसकी स्थिति को भी देखा जा सकेगा एवं उपभोक्ता को नया कनेक्शन लेने के लिए कार्यालय आने की आवश्यकता नहीं है।

बिजली कनेक्शन के लिए आवश्यक दस्तावेज

आवेदकों को इस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन के साथ स्वयं का फोटो, पहचान पत्र, स्वामित्व संबंधी दस्तावेज तथा टेस्ट रिपोर्ट आदि अपलोड करना आवश्यक होगा। इस पोर्टल से आवेदक को अपूर्ण आवेदन होने की स्थिति में रिजेक्शन होने पर रजिस्ट्रेशन शुल्क के अतिरिक्त अन्य जमा शुल्क राशि ऑनलाइन माध्यम से खाते में तुरंत वापस कर दी जाएगी। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा है कि बिजली उपभोक्ताओं को नया बिजली कनेक्शन सुगमता से मिलें इसके लिए कंपनी द्वारा नवीन पोर्टल सरल संयोजन पोर्टल का क्रियान्वयन शुरू कर विधिवत पूर्ण आवेदन पर बहुत ही कम समय में नवीन कनेक्शन उपलब्ध कराया जा रहा है। अब उपभोक्ताओं को नवीन कनेक्शन के आवेदन के लिए सभी जरूरी जानकारी भरने के साथ ही डिमांड नोट का ऑनलाइन भुगतान करने बाद अनुबंध की शर्तें दिखाई देंगी, जिन्हें स्वीकार करने पर पोर्टल में स्वतः ही अनुबंध क्रियान्वित हो जाएगा।

कुसमी के 500 आदिवासी किसानों ने चार दशक बाद फिर शुरू की प्राकृतिक खेती

स्वास्थ जीवन के लिए आदिवासी खुद तैयार कर रहे जैविक खाद

किसानों को दिया गया खाद बनाने का प्रशिक्षण

सीधी। जागत गांव हमार

हार्ट अटैक, कैंसर,बीपी, शुगर, शरीर जकड़न, गांठों में दर्द कमजोरी सहित अन्य गंभीर बीमारी से बचने की कवायद शुरू कर दी गई है। एक बार फिर करीब चार दशक बाद सीधी जिले के कुसमी के ददरिहा, मेड़रा, रामपुर, ठाड़ीपाथर, दुपखड़, कमछ, करौंटी, टमसार सहित आठ गांव में रहने वाले पांच सौ आदिवासी किसान प्राकृतिक पद्धति से खेती की शुरुआत की है। 300 सौ एकड़ में मक्का, 150 एकड़ में अरहर और 50 एकड़ में धान की बोनी की तैयारी में जुटे हैं। बीज की बेहतर गुणवत्ता के लिए बरसों पुराने बीज से बोनी की जा रही हैं। रासायनिक खाद यूरिया, डीएपी की जगह जीव अमृत, घन जीवा अमृत और कीड़े से बचने के लिए कीट प्रबंधक ब्रह्म यात्र, नीमा यात्र और आग्नेय यात्र का उपयोग करते हैं। इस खाद को किसान घर में तैयार करते हैं। इतना ही ऐसे किसान जो खाद नहीं बना सकते वह ग्राम सुधार समिति द्वारा संचालित 06 प्राकृतिक कृषि चेतना केंद्र से कम दामों में खरीद सकते हैं।

खेती करने में समिति कर रही मदद

खेती करने में अंगिरा मिश्रा ग्राम सुधार समिति इनकी मदद करते हैं। समूह बनाकर प्रशिक्षण में दिया जाता है। यहां के आदिवासी अपने दादा,परदादा से प्रेरित होकर गांव में प्राकृतिक खेती में जुट गए हैं। अपनों की सेहत लेकर फिक्र रखने वाले आदिवासी इस उपज का व्यापार नहीं बल्कि खुद खाने में उपयोग करेंगे। इन्द्र बहादुर सिंह गोंड 55 वर्ष निवासी मेड़रा कहते हैं हमारे दादाजी खेत में करीब 4 दशक पहले यूरिया, डीएपी नहीं डालते थे। उपज भले ही कम होती थी लेकिन पोषक तत्व होता था।

कुसमी ब्लाक के 500 किसान, 500 एकड़ जमीन में प्राकृतिक खेती करने जुटे हैं। गर्मी में कुछ किसान मक्का की खेती किए थे। वर्षा में मक्का से शुरुआत हो गई है। यूरिया और डीएपी रासायनिक खाद का उपयोग नहीं करते हैं। इन्हें खाद बनाकर खेत में डालने का प्रशिक्षण दिया गया है।
अंगिरा मिश्रा, ग्राम सुधार समिति

गोबर इकट्ठा कर खेतों में डालते थे

जवाहर सिंह 55 वर्षीय निवासी ददरिहा कहते हैं हमारे पिता सुखलाल सिंह खेतों गोबर खाद डालकर खेती किया करते थे। हम उनका सहयोग करते थे। हमें याद है कि गाय,भैंस, बकरी सहित अन्य पालतू पशुओं के गोबर को पहले खेत में इकट्ठा करते और फिर खेतों में डालते थे। आधुनिकता के दौर में रासायनिक खाद का उपयोग होने लगा। उपज बढ़ा पर बीमारी भी जकड़ने लगी। आए दिन टीवी, मोबाइल, रेडियो कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती को लेकर बताया जाता है। आंगनबाड़ी स्तर पर भी प्राकृतिक तरीके से सब्जी उगाकर खाने को कहते हैं ताकि गर्भवती महिलाएं, बच्चे स्वस्थ रहें। इस बार 2 एकड़ खेत में मक्का, धान और अरहर की प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

रासायनिक खाद से बढ़ी बीमारी

घर परिवार में बीमारी भी घेरने लगी। अब तो डाक्टर, सामाजिक संगठन के लोग प्राकृतिक खेती करने पर जोर दे रहे हैं। पहली बार करीब तीन एकड़ में पूरी तरह से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। मेरे दादा करीब 90 साल तक जिंदा रहे कोई गंभीर बीमारी नहीं थी। अब तो आए दिन हार्टअटैक, बीपी,शुगर, कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लोगों की मृत्यु हो रही है। जिसका कारण भी खानपान ही बताया जाता है।

खाद तैयार करने की विधि

पुष्पराज सिंह निवासी टंमसार बताते हैं कि एक निश्चित मात्रा में ताजा गोबर, छाछ, गुड़,बेसन,नीम की पत्ती, गो मूत्र, चूना,तीखा मिर्च, लहसुन, पपीता,मदार, अमरूद, बेसरम,रेडी की पत्ती, पांच गूदेदार फल और तंबाकू की पत्ती को अलग- अलग विधि से उपयोग कर खाद एवं कीटनाशक दवा तीन से चार दिन में तैयार किया जाता है। जिसका उपयोग आवश्यकता पड़ने पर किसान करते हैं।
प्राकृतिक कृषि चेतना केन्द्र - प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने और लोगों को प्राकृतिक कृषि के बारे में जानकारी देने के लिए टमसार, ददरिहा, मेड़रा एवं करौंटी में प्राकृतिक कृषि चेतना केन्द्र स्थापित किया गया है।

एक शन में विभाग, वैक्सीन के लिए डोर टू डोर सर्वे शुरू

फिर लंपी वायरस का शिकार हो रहे पशु

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

नर्मदापुरम जिले में एक बार फिर से पशुओं में लंपी वायरस दिखाई देने लगा है। यह जानलेवा वायरस पशुओं को संक्रमित करने लगा है। हालांकि, विभाग द्वारा 900 से ज्यादा पशुओं को टीके लगाए गए हैं। विभाग फुट एंड माउथ की वैक्सीन के लिए सर्वे करने की बात कह रहा है। खासकर इटारसी शहर और आसपास के गांव में लंबी वायरस ने दुधारू जानवरों को संक्रमित कर दिया है। पशुओं में लंपी वायरस के जो केस रजिस्टर्ड हुए हैं वह 20 से भी कम है, लेकिन देखा जाए तो पालतू जानवरों को तो पशु मालिक अस्पताल लेकर आते हैं, लेकिन आवारा मवेशियों में भी इसके होने की आशंका है, जिनका इलाज करवाने के लिए बहुत कम लोग पशु चिकित्सालय तक पहुंचते हैं। फील्ड के अनुसार लंपी वायरस से संक्रमित पशुओं की संख्या बहुत ज्यादा हो सकती है।

तापमान कम होने का बढ़ा असर- हालांकि, शहर में जो पशु लंबी वायरस से संक्रमित है उनमें से कई का इलाज तो गौसेवकों ने कर दिया है। पशु अस्पताल के अनुसार डेथ रेट नहीं आने वा रिकवरी अच्छी होने से सेंपल भोपाल सुरक्षा पशु रोग संस्था भेजने की जरूरत नहीं पड़ी। पशु चिकित्सा विभाग का दावा है कि पहले 20 फीसदी केस हो चुके हैं जो तापमान कम होने से अब 5फीसदी से 8फीसदी ही रह गए हैं।

लक्षण दिखते ही यहां करें संपर्क

पहली डोज के 15 दिन पूरे होने पर दूसरा डोज लगाया जाएगा। मानसून आते ही और माउथ की वैक्सीन के लिए डोर टू डोर सर्वे शुरू किया जा रहा है। इस सर्वे में लंपी संक्रमित पशु का भी पता चल जाएगा, जिससे उन्हें सही उपचार दिया सकेगा। संक्रमित पशुओं के लिए पशु संजीवनी एंबुलेंस सेवा भी शुरू की गई है। पशुपालक को किसी भी पशु में लंपी वायरस के लक्षण दिखाई देते हैं, तो संजीवनी एंबुलेंस 1962 नंबर पर कॉल करके जानकारी दे सकते हैं। यह सेवा सुबह 7:00 बजे से शाम के 5:00 बजे के बीच काम करेगी और टीम आपके घर पहुंच जाएगी।

पशुओं को लगाई जा रही वैक्सीन

पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. ज्योति नवड़े ने कहा कि जानवरों की रेंडम सेंपलिंग कवाई गई है, इनकी रिपोर्ट नेगेटिव आई है। संक्रमित जानवर बाहर से आने की आशंका है। मई के दूसरे पखवाड़े में कुछ घरों में वैक्सीनेशन देना शुरू किया और शहर में कई जगह के पशुओं को वैक्सीन लगाई गई है। इसके साथ ही कई गौशालाओं के पशुओं को भी देखा गया है।

किसान 31 जुलाई तक कराएं फसलों का बीमा

कृषि मंत्री पटेल ने प्रचार रथों को दिखाई हरी झंडी

भोपाल। किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने किसानों से 31 जुलाई तक अपनी फसलों का बीमा कराने का आहवान किया है। उन्होंने भोपाल से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रचार रथों को हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया। मंत्री ने कहा कि रथ सभी 53 जिलों में गांव-गांव जाकर फसल बीमा योजना की जानकारी देकर किसानों को फसलों का बीमा कराने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किसानों को आपदा में राहत प्रदान करने के लिये प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना संचालित की जा रही है। योजना से लाभान्वित करने के लिए उनकी फसलों का बीमा कराया जाता है। किसानों से रबी की फसलों का डेढ़ प्रतिशत और खरीफ फसलों का दो प्रतिशत प्रीमियम राशि ली जाती है। फसलों के बीमे के लिये शेष प्रीमियम राशि का भुगतान बीमा कम्पनियों को सरकार के द्वारा किया जाता है। मंत्री ने बताया कि किसानों से वर्ष 2016 से अब तक मात्र 5 हजार 130 करोड़ रुपए की राशि प्रीमियम के रूप में ली गई है। शेष प्रीमियम राशि केन्द्र और राज्य सरकार ने मिल कर जमा की है। अब तक एक करोड़ 74 लाख किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 27 हजार 626 करोड़ 66 लाख रुपए की दावा राशि का भुगतान किया है। मंत्री ने किसानों से आह्वान किया कि गांव-गांव आने वाले प्रचार रथों से फसल बीमा योजना की समुचित जानकारी प्राप्त कर 31 जुलाई से पूर्व अपनी फसलों का बीमा करायें और योजना का लाभ उठाएं।

केसीसी किसानों के लिए वरदान, उपयोग में सावधानी जरूरी

किसानों की धन की कमी न होने पाए, इस उददेश्य से अगस्त 1998 में भारत में किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत की गई थी। देश के तात्कालिक वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा द्वारा यह योजना शुरू की गई थी। किसान क्रेडिट कार्ड किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह उस वक्त किसानों को आर्थिक मदद मुहैया करवाता है, जब उसके पास पैसों को किल्लत होती है। यह कृषि गतिविधियों के लिए किसानों को आर्थिक मदद प्रदान करता है।

किसान क्रेडिट कार्ड योजना भारत सरकार की एक ऐसी वित्तीय योजना है, जो किसानों को खेती में विभिन्न खरीदारी और वित्तीय संबंधित खर्चों के लिए वित्त सहायता प्रदान करती है। परन्तु जागरूकता की कमी और किसान क्रेडिट कार्ड के उपयोग की सही जानकारी न होने के कारण कुछ किसान इस कार्ड का इस्तेमाल गलत तरीके से कर लेते हैं। जिससे किसानों पर ब्याज दर साल दर साल तक बढ़ता जाता है और किसान के लिए यही वरदान अभिशाप नज़र आने लगता है। तो इस लेख के माध्यम से हम आपको किसान क्रेडिट कार्ड के सही उपयोग के तरीके बताएंगे और कुछ टिप्स भी देंगे। यहां कुछ तरीके हैं जिनका उपयोग करके किसान किसान क्रेडिट कार्ड की ब्याज दर को कम कर सकते हैं और सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी का लाभ उठा सकते हैं।

लंबे समय तक बकाया न रखें: एक बैंक के मैनेजर ने बताया कि किसानों को कार्ड के ऋण की राशि को ऐसे खर्च करने से बचना चाहिए, जिससे कोई लंबे समय तक आय नहीं होती है। कार्ड से एक साथ बहुत अधिक राशि निकालने की बजाय छोटी-छोटी राशि में इस्तेमाल करना बेहतर होता है। जब आपको पता हो कि आपके पास कुछ महीनों बाद पैसा आने वाला है तो ही आप कार्ड से राशि निकालें और पैसा आते ही तुरंत खातें में सबमिट कर दें। इससे समय से पहले आपका ऋण भी चुकता हो जायेगा और एक वर्ष पहले जमा करने के कारण आपको उस राशि पर 3 फीसदी ब्याज दर में छूट प्राप्त होगी। इससे आपको सब्सिडी का लाभ मिलेगा और कार्ड पर ब्याज दर भी कम होगी।

फसल सुरक्षा के लिए निवेश करें: किसानों को ऋण की राशि सक्रिय पूंजी में खर्च करना चाहिए। बैंक मैनेजर बतातें है कि किसानों को अपनी राशि को ऐसे खरीददारी में खर्च नहीं करना चाहिए, जिससे आय काफी दिनों बाद मिले या न ही मिले। कुछ किसान कृषि संयत्रों को खरीदने में इस राशि का इस्तेमाल कर लेते हैं, जबकि यह लंबे समय का निवेश माना जाता है। इसके लिए किसान अलग से लोन ले सकते हैं। जिसकी महीने वार किस्त बन जाती है। परंतु किसान क्रेडिट कार्ड के ऋण को ऐसे खर्च में इस्तेमाल से बचना चाहिए। ऐसे निवेश से आपको संभावित आय की संभावना नहीं होती है। किसानों को सिर्फ अपनी फसल की सुरक्षा, खाद खरीदने, खरपतवार नियंत्रण अथवा बीज खरीदने के लिए करना चाहिए ताकि फसल पकने के बाद किसान दो या तीन महीने में अपना कर्ज उतार सके। यह तरीका कार्ड के ऋण पर ब्याज दर को कम करने में मदद करता है।

लगातार बना रहे लेन-देन: किसान क्रेडिट कार्ड खाते में बचत राशि को नियमित रूप से जमा और निकाला जाना चाहिए। इसके माध्यम से किसान सरकारी सब्सिडी का लाभ नियमित

रूप से प्राप्त कर सकता है। इस खाते में लेन-देन लगातार बनी रहनी चाहिए। इससे किसानों का ऋण भी उतरता रहता है और नए ऋण की अवधि भी बढ़ जाती है। किसानों को 5 साल तक इस खातें में राशि का लेन-देन लगातार बनायें रखना चाहिए। इस खातें को एक बचत खातें की तरह इस्तेमाल करना चाहिए।

समय समय पर चेक करते रहे खाते की जानकारी: किसानों को अपने केसीसी खातों की जानकारी को नियमित रूप से प्राप्त करना चाहिए। इसके लिए वे अपने खाते की जानकारी को समय-समय पर चेक कर सकते हैं। बैंक द्वारा भेजे गए संदेशों को भी ध्यान से पढ़ना चाहिए। ताकि उन्हें अपने ऋण चुकाने की अवधि का सही ज्ञान प्राप्त होता रहें।

कृषि के लिए ही करें उपयोग: किसान क्रेडिट कार्ड का उपयोग सिर्फ कृषि संबंधित खरीदारी और खर्चों के लिए ही करना चाहिए। इसके माध्यम से किसान अपनी फसल के लिए बीज, खाद, कीटनाशक, ईंधन, खरपतवारी सामग्री, और सिंचाई सुविधाएं खरीद सकता है।

व्यक्तिगत खर्चों में इस्तेमाल से बढ़ सकती है परेशानी: किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड कार्ड का उपयोग सिर्फ कृषि से संबंधित खर्चों के लिए करना चाहिए। यदि उन्हें किसी व्यक्तिगत खर्च के लिए उपयोग करना हो, तो उन्हें किसान क्रेडिट कार्ड का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। यह किसानों को मुश्किल में डाल सकता है।

आपदा के समय की सुविधा का लें लाभ: किसान क्रेडिट कार्ड कार्ड से आपदा के समय भी सुरक्षित रहा जा सकता है। किसान अपने खाते को सरकारी फसल बीमा योजना से जोड़ सकते हैं, जिससे वे आपदा पर बीमा के द्वारा आर्थिक नुकसान की भरपाई प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही, आपदा के समय किसान को 4 महीने का अतिरिक्त समय भी मिलता है, जिसमें वह अपनी फसल को सुरक्षित रख सकता है और सही दाम पर बेचकर ऋण चुका सकता है।

स्थानीय सरकार की सब्सिडी योजनाओं का उठाएं लाभ: कई स्थानीय सरकारें किसानों के लिए विभिन्न सब्सिडी योजनाएं चलाती हैं। आपको इन योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए ताकि आपको ऋण की ब्याज दर में कमी मिल सके और आर्थिक सहायता मिल सके। इसलिए, स्थानीय कृषि विभाग या सरकारी अधिकारीयों से संपर्क करें और जानें कि आपको किस योजना के लिए योग्यता है या नहीं।

अपनी भूमि का अच्छी तरह से ध्यान रखें: आपकी खेती की सफलता पर भूमि का महत्वपूर्ण रोल होता है। उचित जल संरचना, उर्वरक का उचित उपयोग, सही फसल वरीयता और कीटनाशकों का समय पर उपयोग करने से आप अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं और कृषि गतिविधियों में कम खर्च कर सकते हैं। इससे आपकी वित्तीय स्थिति सुधरेगी और कार्ड का इस्तेमाल सिर्फ भूमि की उत्पादक क्षमता को बढ़ाने वालें उत्पादों पर ही करना चाहिए। इससे किसान की उपज भी बढ़ेगी और किसान का कर्ज भी सही समय अथवा समय से पहले चुकाया जा सकेगा।

इन सरल टिप्स का पालन करके किसान क्रेडिट कार्ड को बचत खाते की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करेगा कि किसान को सरकारी सब्सिडी और आर्थिक सुरक्षा के लाभ का नियमित रूप से प्राप्त होता रहेगा।

महंगाई दर पर असर डाल सकता है टमाटर

पिछले सप्ताह भारत के बाजार में टमाटर के थोक दाम 150 रुपये प्रति किलो के शीर्ष स्तर पर पहुंच गए। कुछ सप्ताह पहले टमाटर 15 से 20 रुपये किलो बिक रहा था। टमाटर की बढ़ती कीमतें देश की अनुमानित महंगाई दर पर असर डाल सकती हैं। आरबीआई के शोधकर्ताओं के एक अध्ययन में कहा गया हैकि टमाटर की कीमत का असर प्याज और आलू पर भी होता है। अगर टमाटर के दाम में कोई बदलाव होता है तो प्याज और टमाटर पर भी उसका असर नजर आने लगता है।

भारतीय रिजर्व बैंक के एक अध्ययन में कहा गया है कि टमाटर की कीमत में उतार चढ़ाव अन्य दो सब्जियों पर जाने से संकेत मिलता है कि कुछ हद तक एक दूसरे पर निर्भरता है और इनकी कीमतें एक दूसरे पर असर डालती हैं। जिसके चलते अन्य खाद्य सामग्री के भाव भी बढ़ते हैं।

टमाटर के थोक दाम 150 रुपये प्रति किलो के शीर्ष स्तर पर पहुंच गए: भारत के सब्जी बाजार में कीमतों के उतार चढ़ाव का स्वरूप नाम से किए गए अध्ययन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने डीआरजी स्टडी सीरीज के तहत धन मुहैया कराया है। रिजर्व बैंक के आंतरिक और नीतिगत शोध विभाग के तहत डेवलपमेंट रिसर्च ग्रुप (डीआरजी) का गठन किया गया है।

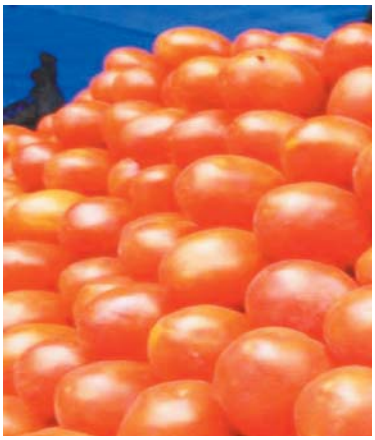

पिछले सप्ताह भारत के बाजार में टमाटर के थोक दाम 150 रुपये प्रति किलो के शीर्ष स्तर पर पहुंच गए। कुछ सप्ताह पहले टमाटर 15 से 20 रुपये किलो बिक रहा था।

सूचकांक में टमाटर, प्याज और आलू की हिस्सेदारी बहुत मामूली: रिपोर्ट में कहा गया है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में टमाटर, प्याज और आलू की हिस्सेदारी बहुत मामूली है, लेकिन इनमें प्रमुख महंगाई दर पर असर डालने की क्षमता है।

एचडीएफसी बैंक में प्रधान अर्थशास्त्री साक्षी गुप्ता ने कहा, 'खाद्य बास्केट में इन सब्जियों का उल्लेखनीय अधिभार है। इनकी कीमत में उतार चढ़ाव का प्रमुख महंगाई पर असर होगा।'

जून में आधार के असर के कारण संभवत: इसका असर नहीं दिखेगा, लेकिन आगे चलकर महंगाई दर बढ़ने का जोखिम है, क्योंकि सिर्फ सब्जियां महंगी नहीं हुई हैं, बल्कि मोटे अनाज और दूध के दाम भी बढ़े हैं। गुप्ता ने कहा कि आंकड़े खाद्य महंगाई की गंभीरता पर निर्भर होंगे, जो 5.5 प्रतिशत पहुंच सकते हैं व 6 प्रतिशत की ओर बढ़ सकते हैं।

खाद्य कीमतों की महंगाई दर 2018-19 तक नीचे रही। खासकर खाद्यान्न के पर्याप्त भंडार और बागवानी उत्पादों के कारण यह काबू में रही। बहरहाल आगे के वर्षों में खाद्य महंगाई दर बढ़नी शुरू हुई और खासकर यह शुरुआत में सब्जियों की महंगाई से शुरू हुई।

महंगाई की मुख्य वजह बहुत ज्यादा बारिश: महंगाई की मुख्य वजह बहुत ज्यादा बारिश है, जिसकी वजह से प्याज, टमाटर और आलू के दाम बढ़े हैं। सीपीआई फूड ऐंड बेवरिज बास्केट में सब्जियों की हिस्सेदारी 13.2 प्रतिशत है, जिनकी खाद्य महंगाई संचालित करने में ऐतिहासिक रूप से अहम भूमिका रही है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कीमत में बढ़ोतरी और उसके बाद खाद्य महंगाई में आने वाली कमी में सब्जियों की अहम भूमिका होती है।

जून के मौद्रिक नीति संबंधी बयान में घरेलू दर तय करने वाली समिति ने कहा था कि प्रमुख महंगाई के भविष्य की राह खाद्य की कीमतों की चाल से प्रभावित होने की संभावना है।

खाद्य वस्तुओं की उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में हिस्सेदारी करीब 40 प्रतिशत होती है। मई महीने में सीपीआई महंगाई गिरकर 25 माह के निचले स्तर 4.25 प्रतिशत पर आ गई थी, क्योंकि खाद्य महंगाई 18 माह के निचले स्तर 2.91 प्रतिशत पर थी। अप्रैल मई में उपभोक्ता महंगाई 4.5 प्रतिशत थी।

सीमांत और छोटे किसान के लिए आजीविका निर्वाह करना एक चुनौती

भारत के लिए देश के छोटे और सीमांत किसानों की स्थिति को ध्यान में रखते हुए विकास और नीति सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

नवीनतम कृषि गणना सन 2010-11 के अनुसार भारत में स्वकर्षित जोतों की संख्या 138 मिलियन थी। वहीं 2001-11 की अवधि में स्वकर्षित जोतों की संख्या में दशाब्दी वृद्धि 22.5प्रतिशत थी। छोटे किसानों की संख्या की तद्नुसार वृद्धि 8.9प्रतिशत थी। इस वृद्धि के कारण इन दो खंडों का संयुक्त अंश 2001-11 की अवधि के दस वर्षों के दौरान 82त्न से बढ़कर 85प्रतिशत हो गया।

अब सीमांत और छोटे किसान कुल स्वकर्षित क्षेत्रफल के 44त्न और स्वकर्षित जोतों की संख्या के 85प्रतिशत हैं। देश के किसानों के 85प्रतिशत की आजीविका निर्वाह आवश्यकताएं भारत के लिए मुख्य विकास और नीति चुनौतियों में से एक है। भारतीय कृषि अपनी छोटी जोतों के स्वरूप के कारण यांत्रिक खेती प्रारंभ करने में असमर्थ-सी रहती है और जब तक विशाल स्तर में विस्तार कार्यक्रम नहीं चलता है। नई प्रौद्योगिकी का अंगीकरण कठिन है। कृषि वृद्धि को धारणीय बनाए रखने और खाद सुरक्षा का उद्देश्य प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता आदनों जैसे सिंचाई, बिजली, उर्वरक, कीटनाशक, तकनीकी जानकारी, बीज, आधार मूल संरचना विकास और बाजार समर्थन आदि बड़ी हुई सरकारी सहायता है।

बढ़े हुए आदान के वित्तीय भार का बड़ा भाग सरकारी सहायता के द्वारा पूरा करना होगा। इसलिए छोटे किसानों की आवश्यकताएं डब्लूटीओ वार्ताओं में यथाविधि हल की जानी चाहिए, क्योंकि यह किसान विकसित देशों के विशाल आकार की यांत्रिक खेती से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते हैं। बाजार सुलभता और संयुक्त राष्ट्र जापान तथा अन्य विकसित देशों में दी गई निर्यात सहायता और घरेलू सहायता की कटौती के अभाव में अन्य देशों द्वारा वचनबद्धता की पूर्ति के बिना व्यापार उदारीकरण नीतियों का अनुसरण किया जाता है तो भारत जैसे देशों को गंभीर प्रतिकूल प्रभाव भुगतने होंगे।

जिले में खरीफ की मुख्य फसल सोयाबीन की जगह किसान अन्य फसलों को दे रहे तरजीह

सोयाबीन में कम हुई किसानों की रुचि, हर साल घट रहा रकबा

भोपाल। जागत गांव हमार

किसी दौर में खरीफ सीजन की मुख्य फसल माने जाने वाली सोयाबीन के प्रति अब किसानों की लगातार रुचि कम हो रही है। यही वजह है कि जिले में साल दर साल सोयाबीन का रकबा कम हो रहा है। हालांकि अब भी कई इलाकों में किसान सोयाबीन की बोवनी करते हैं, लेकिन अब रकबा 20 हजार हेक्टेयर के भी नीचे आ गया है। वहीं दूसरी ओर देखें तो धान का रकबा साल दर साल बढ़ रहा है, 40 हजार हेक्टेयर के ऊपर पहुंच गया है। पिछले सालों में सोयाबीन की फसल मौसम से खराब हो रही है और उत्पादन कम होने के कारण किसानों में सोयाबीन की बोनी को लेकर रुचि घटी है। किसान नाथूलाल मीणा सोंईकला का कहना है कि पिछले दो वर्षों में जिले में औसत से ज्यादा बारिश होने के कारण सोयाबीन की फसल को नुकसान हुआ था। जबकि कभी कभी कम बारिश के चलते सोयाबीन में उत्पादन कम होने और उसमें कीड़े लगने के चलते लगातार किसानों को इस फसल से नुकसानी उठानी पड़ी है। यही वजह है कि इस वर्ष सोयाबीन का रकबा कम कर दिया गया है।

बीते पांच सालों में यूं बढ़ा धान का रकबा

वर्ष	रकबा (हेक्टे में)
2018	32150
2019	35630
2020	41174
2021	42000
2022	43300

बीते पांच सालों में यूं घटा सोयाबीन का रकबा

वर्ष	रकबा (हेक्टे. में)
2018	30480
2019	30000
2020	29105
2021	25800
2022	18500

धान बन रही फायदे की खेती

जहां एक ओर जिले में सोयाबीन का रकबा घट रहा है, वहीं दूसरी ओर धान का रकबा हर साल बढ़ रहा है। किसान महावीर मीणा का कहना है कि धान की फसल लाभ का धंधा है, साथ ही भाव भी अच्छे रहते हैं। इसके साथ ही धान में नुकसान की संभावना कम से कम रहती है। यही वजह है जिले में बीते 20 सालों में धान का रकबा आठ गुना बढ़ गया है।

एक्सपर्ट व्यू

सोयाबीन की फसल कच्ची खेती है, क्योंकि इसमें उत्पादन धीरे धीरे कम नजर आया है, साथ ही कभी बारिश ज्यादा होने से फसल खराब होने का डर रहता है तो कम बारिश के दौरान कीड़े लगने की स्थिति बनती है। यही वजह है कि किसान धान की ओर ज्यादा बढ़ रहे हैं, क्योंकि सिंचाई के साधन भी बढ़ रहे हैं।

डॉ.लाखन सिंह गुर्जर, कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र बड़ौदा

कृषि विज्ञान केंद्र में वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक का आयोजन

फसलों में उत्पादन बढ़ाने और किसानों को ज्यादा लाभ दिलाने पर हुआ विचार

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ में 5 जुलाई 2023 को 28वीं. वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक डॉ. संजय वैशंपायन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कार्यालय संचालक विस्तार सेवायें, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, डॉ. डीएस तोमर, डॉ. एम.के. नायक, डॉ. एम.एल. बल, डॉ. ऐके श्रीवास्तव, कार्यालय सहायक संचालक उद्यान कमलेश अहिरवार, कार्यालय सहायक संचालक मत्स्य प्रभाकर टिकरया, डी.डी.एम. नाबार्ड, मिर्जा फैजल बैग, म.प्र. बीज प्रमाणीकरण अधिकारी अजय पाटीदार एवं कमल सिंह करटे, क्षेत्रीय अधिकारी इफको इंदर सिंह मेवाडा, सुजान सिंह,बीज उत्पादक सहकारी समिति मर्यादित के प्रतिनिधि धर्नेन्द्र सिंह यादव, महिला कृषक उत्पादक संगठन नीतेश चतुर्वेदी, स्व सहायता समूह के सदस्य राजेन्द्र अहिरवार, रजनी नोनटकर, कृष्णा देवी ठाकुर, रिहाना खान एवं प्रगतिशील कृषकों में शिवकुमार नायक, मथुरा प्रसाद कुशवाहा, देवी सिंह ठाकुर, मुन्नी लाल यादव पतंजलि सेवा समिति, आदि ने भाग लिया।

तकनीकी पार्क एवं प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण कराया

केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक, डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. एसके जाटव, डॉ. आईडी सिंह, जयपाल छिगारहा एवं हंसनाथ खान द्वारा केंद्र के तकनीकी पार्क एवं प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण कराया गया। डॉ बीएस किरार ने कृषि विज्ञान केंद्र की वर्ष 2022-23 की गतिविधियों की प्रगति और खरीफ 2023 की गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण किया। डॉ. संजय वैशंपायन द्वारा सभी विभागों के अधिकारियों को सुझाव दिये गये कि लघुधान्य फसलें (श्री अन्न) एवं प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम करें। किसानों के लिए चलाए जा रहे विस्तार कार्यक्रमों में केवीके के वैज्ञानिकों को आवश्यक रूप से बुलाना चाहिए, जिससे फसलों की उन्नत तकनीक का अधिक से अधिक फैलाव हो सके और जिले की प्रमुख फसलों की नई किस्में अधिक फैलें जिससे किसानों का उत्पादन बढ़े। केवीके और कृषि विभाग संयुक्त रूप से तिलहनी फसलों पर प्रशिक्षण एवं संगोष्ठी का आयोजन करे, जिससे तिलहन का उत्पादन बढ़े। उद्यान विभाग के वैज्ञानिक फलदार पौधों के रोपण पर किसानों को तकनीकी सलाह देवें। प्रमुख फसलों की नई नई किस्में बढ़ाने, जल की उपयोगिता बढ़ाने हेतु सूक्ष्म सिंचाई की विधियों एवं नैनो यूरिया के उपयोग बढ़ाने पर जागरूकता हेतु प्रशिक्षण एवं संगोष्ठी का आयोजन किया जाए।

अधिकारियों का एक दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण आयोजित

देवास। जागत गांव हमार

जलवायु आधारित कृषि के तहत आईटीसी मिशन सुनहरा कल, एनसीएचएससी संस्था द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के सभागृह में आयोजित एक दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कायक्रम में देवास जिले के संबंधित कृषि कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के अधिकारियों को खरीफ की फसल सोयाबीन के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, देवास के वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया।

आईटीसी मिशन के टीम लीडर, देवास श्री राजेश वर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य जिले में मास्टर ट्रेनर तैयार कर जिले के मैदानी स्तर पर कृषि विभाग के अमले के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर किसानों को प्रशिक्षित कर बेहतर तरीके से जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए कृषि में उत्पादन लागत में कमी लाते हुए उत्पादन में वृद्धि करना है। केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ए.के.बड़ाया ने सोयाबीनकी उन्नत उत्पादन तकनीकी के बारे में जानकारी दी। तत्पश्चात केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. महेन्द्र सिंह ने खरीफ फसलों में खरपतवार नियंत्रण के बारे में तथा डॉ. मनीष कुमार ने सोयाबीन में कीट प्रबंधन के बारे में बताया।

इस मौके पर उप-संचालक कृषि आर.पी.कनेरिया, कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ. के.एस. भार्गव, डॉ.निशिथ गुप्ता, डॉ. महेन्द्र झसिंह, डॉ. मनीष कुमार, डॉ. लक्ष्मी, नीरजा पटेल, अंकिता पाण्डेय, डॉ. सविता कुमारी के अलावा एस.डी.ओ.,ए.आर.आई, बी.टी.एम., ए.टी.एम., ए.डी.ओ. तथा आईटीसी मिशन सुनहरा कल एवं सहयोगी संस्था एनसीएचएसई के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

संभागायुक्त ने बैठक में जिलेवार कृषि विकास की योजना बनाने दिए निर्देश

सागर। जागत गांव हमार

प्रमुख सचिव कृषि अशोक वर्णवाल, आयुक्त कृषि एम शेलवेंद्रम, सभागीय कमिश्नर सागर डा वीरेंद्र रावत तथा कलेक्टर दीपक आर्य की उपस्थिति में जिले के कृषि वैज्ञानिकों तथा संभाग स्तरीय जिला कृषि अधिकारियों एवम संबद्ध अन्य विभाग के अधिकारियों की बैठक आयोजित कर जिलेवार कृषि विकास प्लान तैयार करने के निर्देश दिए गए थे। उसके तुरंत बाद सम्भागीय आयुक्त डा वीरेंद्र रावत ने आज कृषि विज्ञान केंद्र का भ्रमण कर वहा के प्रमुख वैज्ञानिक एवम हेड डा के एस यादव के साथ बैठक में लिए गए निर्णय अनुसार कृषि तकनीकी के विभिन्न बिंदुओं जैसे सोयाबीन, उर्द, अरहर मक्का , तिल, मूंगफली आदि की उन्नत किस्मों, बीजोपचार एवम खरपतवार नैनो यूरिया एवम नैनो डी ए पी का अनुप्रयोग, बुआई की उन्नत तकनीकी रिज फरो एवम रिज बेड पद्धति, प्राकृतिक खेती के विविध अवयव, जैसे जीवामृत, बीजामृत, घनामृत बनाने की तकनीकी, मोटा अनाज, अरहर में 120 दिन में आने वाली किस्म पूसा 16 एवम धान में पूसा बासमती आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। साथ ही इस अवसर पर केंद्र पर लगे विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों जैसे नर्सरी यूनिट, नेपियर , एजोला तथा स्पिनलेस कैक्टस यूनिट, फलदार वृक्ष यूनिट, औषधि पौध इकाई, मुर्गीपालन इकाई, जैव एवम केंचुआ खाद उत्पादन इकाई, फसल संग्रहालय, कृषि यंत्र प्रदर्शनी आदि का भ्रमण कर किसानों के हित में इन कृषि तकनीकी को विभागीय अधिकारियों के माध्यम से त्वरित गति से किसानों तक पहुंचाने की बात कही।

किसानों को समय समय पर देते रहें अद्यतन जानकारी

इसके अतिरिक्त कमिश्नर डा रावत ने पूरे संभाग के कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे खरीफ पूर्व प्रसार के विभिन्न माध्यमों जैसे कृषि विभाग के मैदानी अधिकारियो को प्रशिक्षण के अलावा आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्रों, सोसल मीडिया आदि के माध्यम से समय समय पर किसानों को उन्नत कृषि तकनीकी ज्ञान से अद्यतन करते रहे। इस अवसर पर तकनीकी अधिकारी पशुपालन श्री डी पी सिंह ने केंद्र की विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन कराया गया।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक में किसानों को दी उचित सलाह

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक किसानों को दी गई उचित सलाह

नरसिंहपुर। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र नरसिंहपुर की 24 वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति बैठक का आयोजन डॉ. संजय वैशंपायन, प्रधान वैज्ञानिक, संचालक विस्तार सेवाएं ज.ने.कृ.कृ.वि.वि. जबलपुर के अध्यक्षता में की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. विशाल मेश्राम के द्वारा वर्ष 2022-23 की प्रगति प्रतिवेदन एवं आगामी खरीफ वर्ष 2023-24 के लिए कार्ययोजना प्रस्तुत की गई। जिलें के अन्य विभागों के साथ किये गये कार्यक्रमों का भी प्रस्तुतिकरण भी डॉ मेश्राम द्वारा किया गया। बैठक में जिले के सभी विभागों के विभाग प्रमुख ने अपने उचित सुझाव दिये। उपसंचालक कृषि डॉ. रामनाथ पटेल के द्वारा जिलें में रिज एवं फेरो तकनीक के साथ अंतरवर्ती फसल अरहर . मक्का, उड़द एवं सोयाबीन के फसलों को बढ़ावा दिया जावें एवं अतंराष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के अंतर्गत कोदो कुटकी एवं रागी पर कृषकों के यहॉ प्रदर्शन आयोजित किये जाए। जिलें के प्रगतिशील कृषक कृष्णपाल लोधी ने प्राकृतिक खेती में देशी बीजों का चयन और जागरूकता की साथ यॉत्रिक विधियों का उपयोग करें। एवं जल संरक्षण पर प्रशिक्षण आयोजित किया जावें। इफको प्रतिनिधि अजय प्रताप सिंह ने नैनो यूरिया एवं नैनो डी.ए.पी. के प्रदर्शन जिलें के प्रत्येक विकासखण्ड में लगाने एवं ड्रोन के माध्यम से नैनो यूरिया एवं नैनो डी.ए.पी. का छिड़काव पर सुझाव दिया।

देवारण्य योजना के बारे में दी जानकारी

आयुष विभाग के प्रतिनिधि डॉ. योगेश राघव के द्वारा देवारण्य योजना के बारे में जिलें जागरूकता हेतु आवला, सफेद मूसली, अश्वगंधा एंव अन्य औषधीय फसलों पर प्रस्करण एंव बाजार उलब्धता पर जानकारी दी। उपसंचालक पशुपालन डॉ नेहा कार्वेटी ने जिले में पशुपालकों हेतु चारा विकास योजना एवं एजोलो उत्पादन हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र पर एजोलो की उपलब्धता एवं नेपियर ग्रास के अच्छी किस्म उपलब्ध कराने पर जोर दिया। प्रगतिशील कृषक श्री रोहित वर्मा, लाल मिट्टी एवं पथरीली जमीन पर फसलों का चयन पर ग्राम में प्रशिक्षण आयोजित किया जावें। प्रगतिशील कृषक श्री स्वदेश कोठारी द्वारा मक्के की उन्नत किस्मों पर प्रदर्शन की बात कहीं। सहायक संचालक उद्यानिकी विभाग से राजाभाऊ रामटेके द्वारा गन्ने मे बायोमास से दोना पत्तल बनाने पर प्रशिक्षण दिया जावें एवं उपपरियोजना संचालक आत्मा श्रीमति शिल्पी नेमा ने सुझाव दिया गया कि जिले में नवाचार हेतु मोटे अनाज पर खरीफ सीजन में प्रदर्शन आयोजित किये जावें। कृषि अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख, श्री राहुल साहू द्वारा अपने विभाग उपलब्ध उन्नत यंत्रो की जानकारी एवं रिज-बेड पर सोयाबीन फसल पर प्रदर्शन का आयोजन समन्वय कर कृषकों के यहॉ लगाने हेतु सुझाव दिया एवं उन्नत कृषि यंत्रो पर प्रशिक्षण दिया जावें साथ ही पौध अवशेष को मिट्टी में मिलाने के लिए विभिन्न यंत्र मौजूद हैं के प्रचार प्रसार में कृषि विज्ञान केन्द्र सहयोग प्रदान करें।

खरीफ सीजन में केन्द्र की कार्ययोजना की जानकारी प्रस्तुत की

केन्द्र वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. मेश्राम द्वारा बताया गया कि वर्ष 2023 को मिलेट वर्ष के रूप में मनाना है। जिसके लिए जिले में मिलेट उत्पादन बढ़ाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम के साथ ही प्रदर्शन भी लगवाया जाना है, कृषि विभाग के सहयोग से कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर ने जिले में कार्यक्रम आयोजन की रूपरेखा को प्रस्तुत किया। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. आशुतोष शर्मा ने बताया कि जिले में चिरोंजी, अमरूद एवं आम के पौधों के साथ ही नेपियर घास 150 कृषकों को वितरित किया गया है। खरीफ सीजन में केन्द्र की कार्ययोजना की जानकारी प्रस्तुत की। अंत में वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति बैठक के अध्यक्ष डॉ. संजय वैशंपायन द्वारा उपरोक्त सुझाव पर अमल करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र को निर्देशित करने के साथ ही औषधीय फसलों एवं मिलेट वर्ष हेतु श्रीअन्न फसलों का फसल संग्रहालय बनवाने हेतु निर्देशित किया। एवं प्राकृतिक खेती में कोदो-कुटकी एवं मोटे अनाज हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र पर प्रदर्शन लगाये जावें जिससे कृषकों के भ्रमण दौरान श्रीअन्न के प्रति जागरूक किया जावें। परामर्शदात्री समिति बैठक का संचालन एवं आभार प्रदर्शन वैज्ञानिक डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी, कु. रिंकी झारिया द्वारा किया गया।

कलेक्टर की अपील पर बोहरा समाज आगे आया

नारियल, बादाम के साथ तैयार होगा हर्बल गार्डन

खरगोन। जागत गांव हमार

कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा के विशेष प्रयासों से शहर के नजदीक 113 एकड़ का एक सुरम्य स्थल विकसित किया जा रहा है। यहां शासन की कुछ योजनाओं और जनसभागिता से इसे विकसित किया जा रहा है। कलेक्टर द्वारा विभिन्न समाज, व्यापारी वर्ग और अन्य लोगों से पौधारोपण में सहभागिता करने की अपील की थी। उनकी अपील पर बोहरा समाज द्वारा इस पुण्य कार्य मे सहभागिता की जाएगी। बोहरा समाज के मीडिया प्रभारी हुजैफा अंसारी ने बताया कि समाज द्वारा भी सहभागिता कर पौधरोपण किया जाएगा। रविवार को यहां करीब 10 विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाने की तैय्यारी कर ली गई है। प्रथम चरण में बादाम, जाम, नारियल, वानिकी पौधे और हर्बल गार्डन से शुरुआत हो रही है। रविवार को होने वाले पौधरोपण के लिए व्यवस्थित प्लानिंग कर ली गई है।

निधिवन में मनरेगा योजना का बड़ा योगदान

मेहरजा स्थित पहाड़ी को निधिवन नाम दिया गया है। इस पहाड़ी पर मनरेगा योजना के तहत विभिन्न कार्य प्रारम्भ हुए है। मनरेगा पीओ श्री श्याम रघुवंशी ने बताया कि मेड़, पाथ वे, श्रीयंत्र और विभिन्न तरह के गार्डन लगाने के अलावा अन्य कार्य भी मनरेगा के तहत लगातार जारी है। निधिवन में बनने वाली मेड़ या पाथ वे पर विशेष ध्यान देकर बनाया जा रहा है। मेड़ के दोनों किनारों पर गुड़हल और चंपा के पौधे सुसज्जित करेंगे। गार्डन के प्रबंधन कार्य के लिए 5 वर्ष तक मनरेगा से मजदूरी सामग्री का भुगतान किया जाएगा।

3 प्रकार की तुलसी, लक्ष्मण फल, सतावरी रुद्राक्ष और शमी जैसे पौधे लहलाहाएंगे

निधिवन में देवारण्य योजना के तहत हर्बल गार्डन विकसित होगा। इसमें श्याम, राम और वन तुलसी के अलावा गिलाई, इलायची, सतावरी, रुद्राक्ष, इन्सुलिन, स्टेविया, हड़जोड़, शमी, जामुन आंवला, हर्रा, पिपरमेंट आदि पौधे लगाएंगे। श्रीयंत्र के पास अलन्दा, मिनी चांदनी, चंपा, अरेलिया, मधुकामिनी और विद्या भी लगाई जाएगी। साथ वानिकी प्रजाति के 10 प्रजाति के पौधे,नारियल व बादाम का बगीचा भी विकसित होगा।

सीआरडीई कृषि विज्ञान केन्द्र, सीहोर की 32 वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विकास की योजनाओं और केंद्र की कार्ययोजना की दी गई जानकारी

सीहोर। जागत गांव हमार

सीआरडीई कृषि विज्ञान केन्द्र, सीहोर की 32 वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन प्रवीण कुमार अढायच, कलेक्टर, सीहोर की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार, जिला- सीहोर में किया गया। बैठक में मुख्यरूप से डॉ. रमेश असवानी, प्रतिनिधि, निदेशक, विस्तार सेवायें, आर. वी. एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, डॉ. एम. डी. व्यास, प्रतिनिधि, आर. ए. के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर, डॉ. जी. आर. अम्बावतिया, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर, डॉ रूपेन्द्र खण्डेकर, प्रमुख, कृषि विकान केन्द्र, राजगढ़, डॉ सुरेन्द्र सिंह, वैज्ञानिक, दलहन अनुसंधान केन्द्र, फन्दा, के. के. पाण्डेय, उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, सीहोर, राजकुमार सगर, सहायक संचालक, उद्यानिकी, संजय शर्मा, सहायक संचालक, कृषि अभियान्त्रिकी, स्वयंसेवी संस्थानों से जीत परमार, मैगी मारिया, जीवन मेवाडा, यशपाल सिंह राजपूत,

संतोष रघुवंशी, इछावर फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी व जिले के प्रगितिशील कृषक एवं संदीप टोडवाल, प्रमुख (प्रभारी), कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियॉ, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक आदि उपस्थित रहे।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में संदीप टोडवाल, प्रमुख (प्रभारी), कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियॉ, सीहोर ने जिले की आधा ात जानका जैसे फसलों की बुवाई, वर्षा के विगत 05 वर्षों के ऑकडे, जिले में सिंचाई के स्रोत, नहर, तालाब, जलाशय नलकूप, टयूबबेल की जानकारी, जिले में कृषकों को श्रेणीवार वृहद, लघु, सीमान्त, लघु सीमान्त, खरीफ फसलों सोयाबीन, मक्का, धान, अरहर, मूॅग, उडद का रकबा, क्षेत्राच्छादन, रबी फसलें गेंहूॅ, चना, मूॅग की जानकारी, उत्पादन, उत्पादकता, सब्जी फसलें, फल व अन्य, पशुपालन, मत्स्य पालन आदि पर संक्षित जानकारी देते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र रबी, 2022-23 की प्रगति जैसे प्रक्षेत्र परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, कृषक व महिला कृषक प्रशिक्षण, स्वरोजगार प्रशिक्षण, विस्तार कार्यकर्ता प्रशिक्षण, अन्य विस्तार गतिविधियों, स्वच्छ भारत अन्तर्गत अन्य गतिविधियों की प्रगति, भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश शासन के फ्लैगशिप कायक्रम एवं कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र इन्स्ट्रक्षनल फार्म की जानकारी विस्तार से पॉवर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुतीकरण कर जानकारी दी।

कृषकों को कृषि यन्त्रों के प्रति जागरूक करने पर दिया गया जोर

डॉ. रमेश असवानी, प्रधान वैज्ञानिक, निदेशालय विस्तार सेवाये, आर. वी. एस. के. वी. वी., ग्वालियर द्वारा जैविक एवं प्राकृतिक खेती के साथ- साथ मोटे अनाजो (मिलेट्स) जैसे- कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार एवं बाजरा इत्यादि फसलों की खेती हेतु कृषको को जागरूक एवं प्रशिक्षित करने की बात कही। डॉ एम. डी. व्यास, प्रतिनिधि, आर. ए. के. महाविद्यालय, सीहोर द्वारा सुझाव दिया गया कि जिले के कृषको हेतु फसलों के उन्नत बीजो का उत्पादन अधिकाधिक किया जावे, अनुकूल बीज दर एवं पौध संख्या हेतु अग्रिम पंक्ति प्रदर्षन लगाये जाये साथ ही कृषकों को कृषि यन्त्रों के प्रति जागरूक किया जाये। के. के. पाण्डेय, उपसंचालक, द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर फसलों में उर्वरक प्रबन्धन, फसल विविधिकरण के प्रति जागरूकता व उत्पादों के मूल्य संवर्धन एवं विपणन पर जोर देने की बात कही। कार्यक्रम के अन्त में संदीप टोडवाल, प्रमुख (प्रभारी), सी. आर. डी. ई., कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनिया, जिला-सीहोर ने सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया।

3 हजार से अधिक लोगों ने पौधों से संजाया मेहरजा की भूमि को

निधिवन में उमड़े शहर के पर्यावरण प्रेमी

संजय शर्मा, जागत गांव हमार, खरगोन।

कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा के विशेष प्रयासों से रविवार को खरगोन शहर से लगे रमणीय स्थल मेहरजा स्थित पहाड़ी पर 1 दिन में 20 से अधिक प्रजातियों के 10 हजार पौधे लगाए। निधिवन को एक निश्चिय योजनानुसार विकसित किया जा रहा है। यहां बादाम गार्डन, नारियल, हर्बल, गुलाब, अमरूद गार्डन के अलावा फूलों की विभिन्न प्रजातियों के गार्डन विकसित करने की योजना है। रविवार को किये गए पौधारोपण की एक व्यवस्थित रूपरेखा के अनुसार ही पौधे लगाए गए।

हर सेक्टर के लिए रखे गए 5-5 पौध रक्षक - यहां 9 अलग अलग सेक्टर में गड्ढे कर उनमें पौधे रखे गए थे। हर सेक्टर में 5-5 पौध रक्षक नियुक्त किये। इन सेक्टर की जिम्मेदारी 9 जनपद सीईओ और उनके उपयंत्री सहायक यंत्री को दी गई थी। जिससे कि एक ही प्रजाति के पौधे एक व्यवस्थित रूप से लगाया जा सकें। यहां के कुल 106 एकड़ में विभिन्न कार्यो के साथ गार्डन विकसित करने की उम्मीद से अच्छी शुरुआत हुई। यहां करीब 3 हजार से अधिक नागरिको की सहभागिता रही। अधिकारियों के अलावा गायत्री परिवार, रोटरी क्लब, बजरंग दल, बोहरा समाज, व अनेक समाजों के लोगो ने पौधें लगाए।

अतिक्रमण होने से बचाकर किया पौधारोपण

इस पूरी पहाड़ी और इसके आसपास के 8 एकड़ क्षेत्र में अतिक्र मण प्रारम्भ हो गया था। इसे रोककर यहां पौधारोपण किया। इस 8 एकड़ के क्षेत्र को गायत्री परिवार ने अपने जिम्मे लिया है। वो ही सेक्टर को विकसित करेंगे। पौधारोपण के दौरान कलेक्टर ने शहर के नागरिकों का आभार मानते हुए। निधिवन की रूपरेखा बताई। कहा कि यहां बच्चों के मनोरंजन और परिवार के साथ समय बिताने के लिए अच्छी रमणीयता का ध्यान रखा गया है। इस क्षेत्र में तालाब का अच्छा उपयोग कर बोटिंग प्रारम्भ की जाएगी।

113 एकड़ में बनकर तैयार होगा निधिवन

कलेक्टर की योजनानुसार इस 113 एकड़ क्षेत्र को विभिन्न चरणों में पूरा किया जाएगा, जिससे आने वाली पीढ़ी में पर्यावरण के प्रति दिलचस्पी जागे। यहां बच्चों के लिए मनोरंजन की तमाम सुविधाएं व्यवस्थाएं जुटाई जा रही हैं। साथ ही खान पान का भी उचित प्रबंध होगा।

शहर वासियों के लिए अवसर

कलेक्टर श्री वर्मा ने शहर वासियों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों व सामाजिक संस्थाओं से आव्हान किया है कि जिला प्रशासन अपने प्रयास कर रहा है। इस स्थल को जनसहभागिता से विकसित किया जाएगा। शहर वासियों के लिए अवसर है कि वे आये और इस बारिश में पौधरोपण कर वन उत्सव मनाएं। इस स्थल को सुरम्य और रमणीय बनाने में सभी का स्वागत है।

खेती का लाभकारी बनाने मिलकर काम करेंगे भारत और ऑस्ट्रेलिया

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और ऑस्ट्रेलिया के कृषि, मत्स्य पालन और वानिकी मंत्री, सीनेटर मरे वॉट के बीच नई दिल्ली में बैठक हुई। इस दौरान, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय कृषि संबंधों को गहरा करने के अवसरों पर चर्चा की गई। दोनों मंत्रियों ने, दोनों पक्षों के बाजार पहुंच संबंधी मुद्दों के समाधान में तकनीकी टीमों के विचार-विमर्श पर संतोष व्यक्त किया। दोनों मंत्री कृषि सहयोग के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को तय करने और आगे बढ़ने के लिए वर्ष 2023 में भारत-ऑस्ट्रेलिया संयुक्त कृषि कार्य समूह की अगली बैठक बुलाने पर भी सहमत हुए। मंत्रियों ने दोनों देशों के किसानों के लाभ के लिए एक-दूसरे से सीखकर कृषि क्षेत्र में मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता दोहराई। ऑस्ट्रेलियाई मंत्री श्री वॉट ने जी-20 कृषि मंत्रियों की बैठक की सफलतापूर्वक मेजबानी करने के लिए कृषि मंत्री को बधाई दी और जी-20 कृषि मंत्रियों की बैठक में शामिल न हो पाने के लिए खेद व्यक्त किया। उन्होंने दोनों देशों के बीच बढ़ते कृषि व्यापार संबंधों की सराहना की और अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग का विस्तार करने की इच्छा व्यक्त की।

पूसा संस्थान के 504 बिस्तरों वाले अंतरराष्ट्रीय छात्रावास मधुमास का केंद्रीय कृषि मंत्री ने किया शुभारंभ

कृषि की चुनौतियों के समाधान और देश-दुनिया की पूर्ति करने में किसानों के साथ वैज्ञानिकों की भूमिका महत्वपूर्ण : तोमर

नई दिल्ली, जागत गांव हमार

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय छात्रावास मधुमास का शुभारंभ केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने किया। इस मौके पर तोमर ने कहा कि कृषि क्षेत्र की चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने व इनके समाधान के साथ देश-दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में किसानों के साथ ही हमारे कृषि वैज्ञानिकों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

शुभारंभ समारोह में मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री तोमर ने गुरूपूर्णिमा की बधाई देते हुए कहा कि किसी भी शिक्षण संस्थान में गुरू-शिष्य परंपरा रहे, उसकी मर्यादा रहे, उसमें आस्था रहे तो वह संस्थान, पूसा संस्थान जैसी तरक्की कर सकता है। तोमर ने 504 बिस्तरों वाले छात्रावास के शुभारंभ पर संस्थान परिवार को बधाई देते हुए प्रसन्नता जताई कि शीघ्र ही यहां और भी सुविधाएं मिलने वाली हैं। तोमर ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश में शिक्षा के बहुत-सारे आयामों के बीच कृषि शिक्षा को चुनना एवं पूसा संस्थान में प्रवेश लेना यहां के विद्यार्थियों के जीवन की दिशा को सुखद बना देगा। उन्होंने कहा कि आज देश के करोड़ों-करोड़ किसानों की जुबां पर भी पूसा संस्थान का नाम है और इसकी अपनी ख्याति है। हम सबका प्रयास है कि देश की आजादी के अमृत काल में यह संस्थान, अंतरराष्ट्रीय संस्थान के रूप में स्थापित हो, जिसकी शुरूआत इस आधुनिक छात्रावास के शुभारंभ के साथ हो गई है।

प्राकृतिक खेती के लिए अलग से सिलेबस तैयार

तोमर ने कहा कि कृषि का क्षेत्र हम सब के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कृषि क्षेत्र में आज हम जिस सौपान पर खड़े हुए हैं, वहां तक पहुंचने में किसानों के साथ ही वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, लेकिन बदलते परिवेश और जलवायु परिवर्तन के दौर में और आने वाले कल में बढ़ने वाली मांग के दृष्टिगत तथा दुनिया की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए निश्चित रूप से हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब हम दुनिया से सीखना चाहते थे, लेकिन आज बड़ी संख्या में अन्य देश कृषि के मामले में भारत से सीखना चाहते है, भारत के रास्ते पर चलना चाहते हैं, तो ऐसी स्थिति में हम सब लोगों की जिम्मेदारियां और भी बढ़ जाती हैं। दूसरे देशों को जब भी जरूरत होगी तो भारत उनकी सहायता के लिए खड़ा होगा। केंद्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश में आई, जिसका समावेश कृषि शिक्षा में हो, इसके लिए काफी काम किया गया है, जो विद्यार्थियों के भविष्य को निखारने में बहुत मददगार सिद्ध होगा। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती के लिए अलग से सिलेबस तैयार कर कृषि शिक्षा में जोड़ा जा रहा है, जो निश्चित रूप से वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप होगा। तोमर ने केमिकल फर्टिलाइजर से बचते हुए, वैकल्पिक रूप से प्राकृतिक खेती व जैविक खेती को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि इससे किसानी के साथ ही देश को भी हर तरह से फायदा ही होगा।

छात्रावास प्रांगण में पौधारोपण किया

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक व डेयर के सचिव डॉ. हिमांशु पाठक तथा आईएआरआई के निदेशक डॉ. अशोक कुमार सिंह ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में अन्य अधिकारी-कर्मचारी व कृषि के विद्यार्थी भी मौजूद थे। मंत्री तोमर व चौधरी ने छात्रावास प्रांगण में पौधारोपण किया एवं फूड कोर्ट का शुभारंभ भी किया। इस छात्रावास में एकल शैया वाले 400 कमरे, स्नानागार- रसोई सहित एकल शैया वाले 56 कमरे व 48 फैमिली अपार्टमेंट हैं, जिनमें 504 छात्रों के रहने की व्यवस्था है। छात्रावास परिसर में व्यायामशाला, रेस्टोरेंट, सौर ऊर्जा प्रणाली, वर्षा जल संचयन प्रणाली, जनरेटर आधारित पॉवर बैकअप, आरओ प्रणाली आधारित पेयजल, अग्निशामक व्यवस्था, पार्किंग क्षेत्र, लिफ्ट प्रणाली जैसी सभी आधुनिक सुविधाएं हैं।

मांस प्रोटीन के गुणों से भरपूर होता है

कैरी निर्भीक मुर्गी पालन से किसानों को हो सकता है लाभ

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा विकसित कैरी निर्भीक एक देसी नस्ल की मुर्गी है, जो मूल रूप से असील पीला जैसी दिखाई देती हैं। कैरी-निर्भीक नर (मुर्गा) के पंखों का रंग सुनहरा-लाल होता हैं जबकि मादा (मुर्गी) में सुनहरे-लाल से पीला होता हैं। इसकी त्वचा और टांग का रंग पीला होता है, जबकि नर में कर्णमूल लाल और मादा में लाल और सफेद होता है। आंखों का रंग मुख्यत: काला है।

उत्पादन विशेषताएं	
20 सप्ताह में शरीर का वजन (पुरुष)	1847 ग्रा.
20 सप्ताह में शरीर का वजन (महिलाएं)	1350 ग्रा.
यौन परिपक्वता के दिनों में आयु	176
वार्षिक अंडा उत्पादन	198
40 सप्ताह में अंडे का वजन	54 ग्रा.
उपजाऊपन	88ग्रा.
हैचैबिलिटी (एफईएस)	81ग्रा.

कैरी-निर्भीक अंडे और मांस उत्पादन के लिए दोहरे प्रकार का रंगीन स्वदेशी चिकन है। इसका मांस प्रोटीन के गुणों से भरपूर होता है। इस नस्ल की मुर्गी तेज तर्रार, आकार में बड़ी, शक्तिशाली और मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली होती हैं। नर में लड़ने की प्रवृत्ति और मादा में चिड़चिड़ेपन की प्रवृत्ति इस किस्म के कुछ अनोखे लक्षण हैं। इस नस्ल के नर और मादा का वजन लगभग 20 सप्ताह के अंदर ही 1850 और 1350 ग्राम के आसपास हो जाता है। इस किस्म की मुर्गियों से लगभग 170-180 दिनों में 170-200 अंडों का उत्पादन ले सकते हैं। इनके अण्डों का वजन लगभग 54 ग्राम होता हैं। इन पक्षियों की प्रजनन क्षमता, अंडों से निकलने की क्षमता और अंडे के अंदर रहने की क्षमता क्रमश: 88, 81 और 94प्रतिशत के आसपास दर्ज की गई है। आजकल कई किसान इस पक्षी को 2000 से 5000 पक्षियों के साथ स्टॉल फीडिंग के साथ सीमित क्षेत्र में रखते हैं।

एकीकृत बागवानी विकास मिशन में इकाई स्थापित करने हेतु आवेदन आमंत्रित

खंडवा। उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण अंतर्गत संचालित एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजनान्तर्गत इकाई स्थापित करने हेतु कृषकों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं । उप संचालक उद्यानिकी राजू बड़वाया ने बताया कि इस योजना अंतर्गत फल क्षेत्र विस्तार, केला टिश्यू कल्चर अ.ज.जा. वर्ग के लिए, सब्जी क्षेत्र विस्तार सभी वर्ग के लिए, मसाला क्षेत्र विस्तार अ.जा. एवं अ.ज.जा. वर्ग के लिए, पुष्प क्षेत्र विस्तार एवं प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना में जिले को 119 इकाई स्थापित करने का लक्ष्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि इस योजना में एस.एच.जी., एफ.पी.ओ., कॉपरेटिव सोसाइटी, हेतु 3 का लक्ष्य प्राप्त हुआ है, जिसमें खाद्य संस्करण से संबंधित इकाई लगाई जा सकती है। इच्छुक कृषक इस योजना का लाभ लेने हेतु विभागीय पोर्टल https:// mpfsts.mp.gov.in पर आवेदन कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये कार्यालय उप संचालक उद्यान, जेल रोड़, सिविल लाईन्स, खण्डवा में एवं वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी विकासखण्ड खण्डवा, छैगांवमाखन, पंधाना, पुनासा, खालवा, हरसूद एवं बलड़ी से संपर्क कर सकते हैं।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)